प्रश्न- **मालदीव में हाल ही में हुए सत्ता परिवर्तन का भारत के साथ संबंधों पर क्या असर पड़ेगा? पिछले दिनों चीन की सक्रियता से भारत के साथ मालदीव के संबंधों में जो नकारात्मकता आयी है, उसे देखते हुए भारत को किस प्रकार के तौर-तरीके अपनाने चाहिए? सुझाव सहित विवेचना कीजिए। (250 शब्द)**

What effects will be there on the relations with India of the recent power change in Maldives? Considering the negativity which grew in the relations of Maldives with India due to the activities of China in last days, which type of strategy should India adopt? Discuss with suggestion.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- सितंबर, 2018 में मालदीव में राजनीतिक अस्थिरता के बीच अप्रत्याशित रूप से अब्दुल्ला यामीन की हार हुई तथा विपक्षी उम्मीदवार एवं भारत समर्थक इब्राहिम मोहम्मद सोलिह को जीत हासिल हुई। दरअसल, अब्दुल्ला यामीन के कार्यकाल में भारत तथा मालदीव के बीच संबंध अत्यधिक तनावपूर्ण हो गए थे, साथ ही चीन के बढ़ते प्रभाव ने भारत की रणनीतिक स्थिति को कमजोर कर दिया था।

भारत के लिए मालदीव की महत्ता बहुत अधिक है। इसकी भू-राजनीतिक अवस्थिति महत्त्वपूर्ण है। मालदीव के निकट से विश्व के महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग गुजरते हैं तथा यह भारत के लक्षद्वीप से अधिक निकट है। भारत का अधिकांश व्यापार हिन्द महासागर के रास्ते से ही होता है। अत: सुरक्षा तथा रणनीतिक नजरिए से भारत के लिए मालदीव की महत्ता बढ़ जाती है। यही कारण था कि भारत प्रथम देश था, जिसने 1965 में मालदीव के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकार किया तथा उसके साथ रणनीतिक संबंध स्थापित किए। 1988 में ऑपरेशन कैक्टस के जरिए वहां लोकतंत्र की रक्षा की।

हालिया समय में 2013 से भारत-मालदीव के संबंधों में गिरावट आयी क्योंकि अब्दुल्ला यामीन के नेतृत्व में उसका झुकाव चीन की ओर हुआ। चीन ने मालदीव में अवसंरचनात्मक निवेश के जरिए अपना प्रभाव बढ़ाया। 2014 में चीनी राष्ट्रपति शी-जिनपिंग ने मालदीव की यात्रा की तथा फ्रेंडशिप ब्रिज का उद्घाटन किया। इसी बीच भारत तथा मालदीव के बीच संबंधों में निरंतर गिरावट आती रही। 2015 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी मालदीव यात्रा स्थगित कर दी। मालदीव ने भी पहले चीन की नीति का अनुसरण करते हुए 2018 में भारत द्वारा आयोजित मिलन अभ्यास में भाग लेने से मना कर दिया तथा भारत द्वारा दिए गए दो ध्रुव हैलीकॉप्टर को वापस लेने को कहा।

अब जबकि मालदीव में भारत समर्थक सरकार का आगमन हुआ है, तो भारत मालदीव के साथ फिर से संबंधों को सुधार सकता है तथा अपने हितों को बढ़ावा दे सकता है।

- भारत को मालदीव में अवसंरचनात्मक निवेश बढ़ाना चाहिए तथा वहां निवेश करने के लिए अन्य भारतीय भागीदारों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि चीन को प्रतिसंतुलित किया जा सके।
- भारत को मालदीव के लिए बिना शर्त किसी भी आर्थिक सहायता के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।
- भारत को मालदीव में अवसंरचनात्मक प्रोजेक्ट समय सीमा में समाप्त करने की ओर ध्यान देना होगा, जोकि चीनी कंपनियाँ सदैव करती हैं।
- भारत को मालदीव के साथ आतंकरोधी सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए तथा वहाँ के सुरक्षा बलों की क्षमता वृद्धि तथा प्रशिक्षण पर सहयोग करना चाहिए।
- दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय सुरक्षा वार्ता को विस्तृत तथा संस्थात्मक रूप दिया जाना चाहिए। यह ट्रैक-II तथा ट्रैक-1.5 वार्ताओं का पूरक होना चाहिए।
- मालदीव जैसे छोटे देश के साथ संबंधों में गुजराल डॉक्ट्रिन का सदैव ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि एक-दूसरे के प्रति विश्वास में वृद्धि हो सके। इस प्रकार उपर्युक्त पहलें मालदीव की नवीन सरकार एवं भारत के मध्य संबंधों को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो सकती हैं।